15.4.24

Dt_

Pg 1 D+

Tender Heart High School, Sec.33-B, CHD.

कक्षा- आठवीं   शिक्षिका- सुमन शर्मा

विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-2 'बड़े भाई साहब') 2

लेखक- प्रेमचंद

पुस्तक- नवतरंग भाग-8

सुप्रभात प्यारे बच्चो!

आज हम पाठ 2 'बड़े भाई साहब' के अगले भाग को पढ़ेंगे। पिछले सप्ताह हमने पढ़ा था कि बड़े भाईसाहब ने खेल में सुबह का समय व्यतीत करने पर लेखक को बहुत डाँटा था। उन्होंने कहा था कि कक्षा में प्रथम आने पर यदि उन्हें घमंड हो गया है तो यह जान लो कि घमंडी का सिर नीचा होता है। तुमने तो अभी एक दरजा पास किया है और अभी से तुम्हारा सिर फिर गया, तब तो तुम आगे बढ़ चुके। यह समझ लो कि तुम अपनी मेहनत से पास नहीं हुए, अंधे के हाथ बटेर लग गई। मगर बटेर केवल एक बार लग सकती है; बार-बार नहीं। कभी-कभी गुल्ली-डंडे में भी अंधा चोट निशाना पड़ जाता है। उससे कोई सफल खिलाड़ी नहीं हो जाता। सफल खिलाड़ी वह है, जिसका कोई निशाना खाली न जाए। मेरे फेल होने पर न जाओ। मेरे दरजे में आओगे, तो दाँतों पसीना आ जाएगा। जब अलजबरा और जॉमेट्री के लोहे के चने चबाने पड़ेंगे और इंगलिस्तान का इतिहास पढ़ना पड़ेगा! बादशाहों के नाम याद रखना आसान नहीं। आठ-आठ-हेनरी ही गुजरे हैं। कौन-सा कांड किस हेनरी के समय हुआ, क्या यह याद करना आसान समझते हो?

(पृष्ठ-1)

Tutorial

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

15.4.24

Dt.
Pg. 2 B+

कक्षा- आठवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-2 बड़े भाई साहब)

दर्जनों तो जेम्स हुए हैं, दर्जनों विलियम! दिमाग चक्कर खाने लगता है। एक ही नाम के आगे दोयम, सोयम, पंजुम लगाते चले गए। मुझसे पूछते तो दस लाख बता देता। जॉमेट्री तो बस खुदा की पनाह!.. अबजद और अजब में क्या फर्क है और व्यर्थ की बात के लिए क्यों छात्रों का खून करते हो? दाल-भात-रोटी खाई या भात-दाल-रोटी खाई, इसमें क्या रखा है; मगर इन परीक्षकों को क्या परवाह! वह तो वही देखते हैं, जो पुस्तक में लिखा है। चाहते हैं कि लड़के अक्षर-अक्षर रट डालें। इसी रटंत को शिक्षा नाम दिया गया है।

भाई साहब ने निबंध लेखन को समय की बर्बादी बताया और कहा कि परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए मेहनत करनी पड़ती है। स्कूल जाने का समय हो गया था, नहीं तो भाईसाहब दो-चार बातें और सुना देते। इतना सुनने के बाद भी लेखक की पढ़ाई में अरुचि तथा खेल में रुचि बनी रही।

भाईसाहब को पढ़ाई बहुत कठिन लगती थी। वे लेखक को बार-बार पढ़ने को कहते थे। वे पढ़ाई के लिए उसका महत्त्व बताते हुए लेखक को समझाते थे। इसे सुनकर लेखक के मन में डर बैठ गया। वे पढ़ाई को हौआ समझने लगे। भाई साहब और लेखक के बीच सिर्फ दो कक्षा की दूरी रह गई थी।

फिर सालाना इम्तहान हुआ, और फिर कुछ

(पृष्ठ-2)

Tutorial
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

Dt. 15.4.24
Pg 3 B+

Tender Heart High School, Sec. 33-B, CHD.

कक्षा - आठवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-2 'बड़े भाई साहब')

ऐसा संयोग हुआ कि मैं फिर पास हुआ और फिर से भाईसाहब फ़ेल हो गए। मैंने बहुत मेहनत न की थी पर न जाने कैसे दरजे में अव्वल आ गया। मुझे खुद अचरज हुआ। भाई साहब ने प्राणांतक परिश्रम किया था। कोर्स का एक-एक शब्द चाट गए थे; मगर बेचारे फ़ेल हो गए। मुझे उन पर दया आती थी। नतीजा सुनाया गया, तो वह रो पड़े और मैं भी रोने लगा। अपने पास होने वाली खुशी आधी हो गई। मैं भी फ़ेल हो गया होता, तो भाई साहब को इतना दुख न होता।

मेरे और भाई साहब के बीच अब केवल एक दरजे का अंतर और रह गया। मेरे मन में एक कुटिल भावना उदय हुई कि कहीं भाई साहब एक साल और फ़ेल हो जाएँ, तो मैं उनके बराबर हो जाऊँ, फिर वे मेरी किस आधार पर फजीहत कर सकेंगे, लेकिन मैंने इस विचार को दिल से बलपूर्वक निकाल डाला। आखिर वे मेरे हित के विचार से ही तो डाँटते हैं। मुझे उस वक्त अप्रिय लगता है अवश्य, मगर यह शायद उनके उपदेशों का ही असर हो कि मैं दनादन पास होता चला जाता हूँ और इतने अच्छे नंबरों से।

अब भाई साहब कुछ नर्म पड़ गए थे। कई बार मुझे डाँटने का अवसर पाकर भी उन्होंने धीरज से

(पृष्ठ-3)

Tutorial

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Dt. 15.4.24
Pg. 4

कक्षा- आठवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-2 'बड़े भाई साहब')

काम लिया। शायद अब वे खुद सोचने लगे थे कि मुझे डाँटने का अधिकार उन्हें रहा; या रहा तो बहुत कम। भाई साहब के डर से जो थोड़ा-बहुत पढ़ लिया करता था, वह भी बंद हुआ। मुझे कनकौए उड़ाने का नया शौक पैदा हो गया था और अब सारा समय पतंगबाजी की ही भेंट होता था, फिर भी मैं भाईसाहब का अदब करता था, और उनकी नज़र बचाकर कनकौए उड़ाता था। माँझा देना, कन्ने बाँधना, पतंग टूर्नामेंट की तैयारियाँ आदि समस्याएँ अब गुप्त रूप से हल की जाती थीं।

एक दिन संध्या समय होस्टल से दूर मैं एक कनकौआ लूटने बेतहाशा दौड़ा जा रहा था। आँखें आसमान की ओर थीं। बालकों की एक पूरी सेना लग गई; और झाड़ फूस लिए उनका स्वागत करने को दौड़ी आ रही थी। किसी को आगे-पीछे की खबर न थी। सभी मानो उस पतंग के साथ ही उड़ रहे थे, जहाँ सब कुछ समतल है, न मोटरकारें हैं, न गाड़ियाँ।

बच्चो! आज हम इस पाठ को यहीं तक पढ़ेंगे। पाठ का शेष भाग अगले सप्ताह पढ़ेंगे। अब मैं आपको गृहकार्य दूँगी।

गृहकार्य:- सब बच्चे कठिन शब्दों के अर्थ याद करेंगे व पाठ को पढ़ेंगे।

धन्यवाद।

(अंतिम पृष्ठ-4)

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner